

भगत नामदेव – सबद ४३
हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥
रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६४

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥
भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥१॥
हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥१॥ रहाउ ॥
लै कमली चलिओ पलटाइ ॥
देहुरै पाछे बैठा जाइ ॥२॥
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥
भगत जनाँ कउ देहुरा फिरै ॥३॥ ६॥

सार: आध्यात्मिकता आंतरिक यात्रा है जो हमारे वास्तविक स्वरूप और सभी जीवों के साथ हमारे जुड़ाव का बोध कराती है। यह बाहरी पहचान या रीति-रिवाजों पर नहीं, बल्कि जागरूकता, करुणा, ईमानदारी और मन की शांति से पनपती है। जब हम भक्ति को आनंद, सहजता और खुले मन से अपनाते हैं, तब वह स्वाभाविक बन जाती है। वास्तविक आध्यात्मिकता सामाजिक उपाधियों या भूमिकाओं पर नहीं, बल्कि अपनी अंतरात्मा के साथ जीवंत संबंध पर आधारित होती है। स्वयं को सिद्ध करने या समाज की अपेक्षाओं में ढलने का बोझ छोड़ देने पर मन ग्रहणशील बन जाता है। इस अवस्था में, करुणा सहज रूप से बहती है और पवित्रता हमारे दैनिक जीवन में जीवंत उपस्थिति बन जाती है।

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥
हंसते-खेलते मैं आपके मंदिर में आया। यह आध्यात्मिकता के प्रति आनंदपूर्ण और सरल सहज दृष्टिकोण को दर्शाता है जो रीति-रिवाजों और पहचान के बंधनों से मुक्त है।

भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥ १ ॥

जब नामदेव भक्ति में लीन थे तब उन्हें पकड़कर बाहर निकाल दिया गया। यह भेदभाव के उन मुद्दों को उजागर करता है जो सच्ची आध्यात्मिकता के बजाय कठोर और बहिष्कारी धार्मिक और सामाजिक मानदंडों को प्राथमिकता देते हैं। (१)

हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥

हे सर्वव्यापी, सर्वोच्च शक्ति, मैं समाज के उपेक्षित वर्ग से हूँ। यह सच्चाई ऊँच-नीच और भेदभाव के घावों को उजागर करती है, जिससे तिरस्कार और हीन भावना पैदा होती है जो एकता और सम्मान में बाधा डालती है।

छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मैं कपड़े छापने वाले 'छिप्पा' समुदाय के निम्न-जाति परिवार में क्यों पैदा हुआ? यह अस्तित्व से जुड़ा सवाल पहचान को लेकर उपजे दुख को ज़ाहिर करता है, ऐसी पहचान जिसे अक्सर भाग्य मान लिया जाता है लेकिन मन का सच विरासत में मिली इन पहचानों से अपना मूल्य तय नहीं करता। (१)(विराम)

लै कमली चलिओ पलटाइ ॥

अपना कंबल लेकर मैं वहाँ से मुड़कर चल पड़ा। यह बाहरी स्वीकृति की अपेक्षा छोड़कर सादगी और प्रामाणिकता को अपनाने की ओर संकेत करता है।

देहरै पाछै बैठा जाइ ॥ २ ॥

मैं जाकर मंदिर के पीछे बैठ गया। यह दिखाता है कि एक साधक सत्ता की सीमाओं से परे जाकर भी दिव्यता से अपना संबंध बनाए रख सकता है। (२)

जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥

जैसे-जैसे नामदेव सर्वव्यापक सत्ता के गुणों का गान करते गए। यह संकेत देता है कि निरंतर चिंतन हमारी पहचान की सीमाओं को बदलकर एकत्व की अनुभूति में बदल देता है।

भगत जनों कउ देहुरा फिरै ॥३॥६॥

भक्त के लिए मंदिर स्वयं घूम गया। यह रूपक नज़रिए में बदलाव को दर्शाता है, जिसमें साधक को अनुभव होता है कि दिव्यता उनकी ओर बढ़ती है जिनमें आंतरिक सामंजस्य और प्रेम होता है।

(३)(६)

तत्त्व: भगत नामदेव का मानना है कि सार्वभौमिक सत्य कठोर ढांचों में नहीं, बल्कि मनुष्य की अंतरात्मा में निवास करता है। पुजारियों द्वारा उन्हें जबरन मंदिर से बाहर निकाले जाने का अनुभव, सामाजिक बहिष्कार की दुखद सच्चाई और सबको साथ लेकर चलने के महत्त्व को उजागर करता है। मंदिर का भक्त की ओर मुड़ जाना पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देता है, दिव्यता व्यक्ति स्वयं प्राप्त नहीं करता बल्कि सच्ची नीयत से प्रकट होती है। यह बोध, रेखांकित करता है कि सार्वभौमिक चेतना असीम है और उनमें पनपती है जो सत्य और विनम्रता को आत्मसात करते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com